भारतीय विश्वविद्यालयों में ज्योतिष शिक्षा

ज्योतिषाचार्य
तेजस्कर पाण्डेय

अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि भारत में विश्वविद्यालयों में ज्योतिष शिक्षा केवल शास्त्र और परंपरा का हस्तांतरण भर नहीं है, बल्कि यह एक जीवंत संवाद है - जहाँ गणना, अनुभव, विश्वास और सांस्कृतिक बोध मिलकर एक समग्र दृष्टिकोण को जन्म देते हैं. यह शिक्षा भारतीय समाज की आत्मा से जुड़ी हुई है, और भविष्य में यह न केवल अकादमिक बल्कि सामाजिक और व्यक्तिगत स्तर पर भी निर्णायक भूमिका निभाने में सक्षम होगी.

भारत वर्ष में ज्योतिष शास्त्र का शिक्षण प्राचीन काल से ही विद्यमान रहा है, जहाँ इसे वेदांगों में एक प्रमुख अंग के रूप में स्वीकार किया गया. वैदिक परंपरा में काल निर्धारण, यज्ञों की सिद्धि, ऋतुओं की गणना, और पर्वों के आयोजन हेतु समय की शुद्धि जैसे विविध प्रयोजनों से ज्योतिष का व्यापक उपयोग होता था. 'ज्योतिषं वेदानां चक्षुः' अर्थात् ज्योतिष वेदों की आँख है - यह प्रसिद्ध वाक्य इस शास्त्र की महत्ता को दर्शाता है. इस शास्त्र की बुनियाद खगोल विज्ञान, गणितीय विश्लेषण, तथा मानवीय जीवन की घटनाओं के सहसम्बंध पर टिकी हुई है. प्राचीन भारत के विश्वविद्यालयों - तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला, वल्लभी आदि में जहाँ दर्शन, आयुर्वेद, व्याकरण और न्याय के साथ-साथ ज्योतिष का भी गहन अध्ययन होता था, वहीं आचार्य आर्यभट, वराहमिहिर, ब्रह्मगुप्त और भास्कराचार्य जैसे महाज्ञानी विद्वानों ने इस शास्त्र को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से समृद्ध किया. इन आचार्यों द्वारा रचित ग्रंथ- आर्यभटीय, पंचसिद्धान्तिका, ब्रह्मस्फुट सिद्धान्त, सिद्धान्त शिरोमणि - आज भी विश्वविद्यालयीन पाठ्यक्रमों का आधार बने हुए हैं.

औपनिवेशिक काल में जब भारतीय ज्ञान परंपराओं को तिरस्कृत किया गया, तब पारंपरिक गुरुकुलों और संस्कृत महाविद्यालयों में ज्योतिष की शिक्षा सीमित हो गई. परंतु स्वतंत्रता के पश्चात जब भारतीयता की पुनरस्थापना का अभियान प्रारंभ हुआ, तब विभिन्न संस्कृत विश्वविद्यालयों और संस्थानों ने इस शास्त्र को पुनः प्रतिष्ठित किया. वर्ष 2001 में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) ने 'वास्तविक विज्ञान' की परिभाषा का विस्तार करते हुए ज्योतिष और ज्योतिषीय गणनाओं को विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम में स्थान देने का निर्णय लिया, जिससे पूरे देश में ज्योतिष शिक्षा का एक संस्थागत ढांचा विकसित होने लगा.

आज भारत के अनेक केंद्रीय, राज्य एवं संस्कृत विश्वविद्यालयों में ज्योतिष को एक स्वतंत्र विषय के रूप में पढ़ाया जा रहा है. काशी हिंदू विश्वविद्यालय (बीएचयू), सम्पूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय (वाराणसी), उत्तराखंड संस्कृत विश्वविद्यालय (हरिद्वार), श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय (नई दिल्ली), राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान (अब सेंट्रल संस्कृत यूनिवर्सिटी), जगन्नाथ संस्कृत विश्वविद्यालय (पुरी), वेदविद्या प्रतिष्ठान (उज्जैन), के अलावा राजस्थान, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, कर्नाटक, तमिलनाडु, और गुजरात के अनेक विश्वविद्यालयों ने ज्योतिष शिक्षा के स्नातक , स्नातकोत्तर , डिप्लोमा, सर्टिफिकेट, और पीएचडी स्तर के पाठ्यक्रम आरंभ किए हैं. इनके अतिरिक्त कई ओपन विश्वविद्यालयों जैसे इग्नू और राज्यस्तरीय मुक्त विश्वविद्यालयों में भी ज्योतिष के अल्पकालिक पाठ्यक्रम चल रहे हैं.

इन पाठ्यक्रमों में शिक्षा का स्वरूप पारंपरिक ग्रंथों और आधुनिक तकनीकों का समन्वय है. विद्यार्थियों को जातक (होराशास्त्र), सिद्धांत (गणित एवं खगोलशास्त्र), मुहूर्त (निर्णयात्मक काल विज्ञान), प्रश्नशास्त्र (आंशिक रूप से मनोवैज्ञानिक विश्लेषण), और नक्षत्र विज्ञान जैसे विषय पढ़ाए जाते हैं. पंचांग निर्माण, ग्रह-गणना, दशा प्रणाली, भाव विवेचन, गोचर निर्णय, योग विचार, नवांश विश्लेषण और विविध प्रकार की गणनाएँ पढ़ाई जाती हैं. इन शिक्षण कार्यक्रमों में कंप्यूटर आधारित ज्योतिष सॉफ्टवेयर का प्रयोग भी प्रोत्साहित किया जाता है जिससे छात्र परंपरागत विधियों के साथ-साथ आधुनिक डिजिटल गणना में भी दक्ष हो सकें.

ज्योतिष शिक्षा को लेकर समाज में दो धाराएँ देखने को मिलती हैं - एक ओर इसे भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों का अंग मानकर स्वीकारा जाता है, वहीं दूसरी ओर कुछ बुद्धिजीवी वर्ग इसे अकादमिक मानकों के अनुरूप नहीं मानते. जब विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने 2001 में इसे मान्यता दी, तो इसके विरोध में कई याचिकाएं भी न्यायालय में दाखिल हुईं, परन्तु भारत के उच्चतम न्यायालय ने इस विषय को भारतीय ज्ञान परंपरा का हिस्सा मानते हुए वैधता दी. इस निर्णय के बाद ज्योतिष शास्त्र ने संस्थागत शिक्षा में स्थायित्व प्राप्त किया. कुछ वैज्ञानिकों का मत है कि ज्योतिष सांख्यिकीय पूर्वानुमान पर आधारित अनुशासन है, जबकि समाजविज्ञानी इसे सांस्कृतिक विश्वास प्रणाली (के रूप में भी देखते हैं.

अद्यतन समय में ज्योतिष केवल धार्मिक या सांस्कृतिक प्रसंगों तक सीमित न रहकर, जीवन के विभिन्न आयामों - जैसे करियर, विवाह, मानसिक स्वास्थ्य, शारीरिक रोगों की प्रवृत्ति, कृषि, वित्तीय निर्णयों आदि में परामर्श की दृष्टि से प्रयोग में लाया जा रहा है. इस पृष्ठभूमि में विश्वविद्यालयों में पढ़ाए जाने वाला पाठ्यक्रम भी अधिक अंतर्विषयक होता जा रहा है. अब यह शिक्षा केवल संस्कृत जानने वालों तक सीमित नहीं, बल्कि अंग्रेज़ी, हिंदी, कन्नड़, तमिल, गुजराती आदि भारतीय भाषाओं में भी उपलब्ध है, जिससे यह व्यापक जनसमूह तक पहुँच रही है.

भारत सरकार के आयुष मंत्रालय, नीति आयोग, और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी पारंपरिक भारतीय ज्ञान प्रणालियों (क्वयस) को पुनर्जीवित करने पर बल दिया गया है. शिक्षा मंत्रालय द्वारा गठित क्वयस डिवीजन के अंतर्गत ज्योतिष शिक्षा के पठन-पाठन, अनुसंधान और प्रशिक्षण की योजनाएँ विकसित की जा रही हैं. यह प्रक्रिया इस ओर संकेत करती है कि भविष्य में ज्योतिषीय शिक्षा को केवल परंपरा की दृष्टि से नहीं, बल्कि एक वैकल्पिक ज्ञान प्रणाली और निर्णय उपकरण के रूप में भी मान्यता मिल सकती है.

वर्तमान में, अनेक विश्वविद्यालयों में पीएचडी स्तर पर ऐसे शोध हो रहे हैं जो ज्योतिष को मनोविज्ञान, समाजशास्त्र, चिकित्सा, और पर्यावरणीय घटनाओं के साथ जोड़ने की दिशा में हैं. विदेशी छात्र भी अब भारत में पारंपरिक ज्योतिष की शिक्षा लेने आ रहे हैं, जिससे यह विषय वैश्विक पटल पर अपनी उपस्थिति दर्ज करा रहा है.

साप्ताहिक राशिफल

दिनांक- 20 जुलाई से 26 जुलाई तक

ज्योतिषाचार्य प्रियंका नारायणशंकर व्यास,
कोतवाली बाजार,
जबलपुर मो.नं.
098266-21998

साप्ताहिक ग्रहस्थिति- इस सप्ताह सूर्य कर्क राशि में, मंगल सिंह राशि में, वक्री बुध कर्क राशि में, गुरू मिथुन राशि में, शुक्र वृषभ राशि में, वक्री शनि मीन राशि में, राहु कुम्भ राशि में, केतु सिंह राशि में और चन्द्रमा मेष वृषभ मिथुन और कर्क राशि में संचरण करेगा.

ग्रहयोगों का प्रभाव :- ता. 20 को पुष्ये रवि और बुध का अस्त पश्चिम होने से सभी अनाजों रूई, कपास, सूत, कुमकुम, चंदन, कपूर, केसर, तेल, घी, तिलहन, सोना, चांदी आदि शेयर बाजारों में तेजी करता है. भारत के अनेक प्रांतों में तूफ़ान, पर्वतीय क्षेत्रों में वर्षा कुछ स्थानों पर आकाशीय बिजली गिरने से हानि हो सकती है.

पर्व-व्रत-त्यौहार :

सोमवार	21 जुलाई को	कामिका एकादशी व्रत, श्रावण सोमवार व्रत, महाकाल सवारी उज्जैन
मंगलवार	22 जुलाई को	प्रदोष व्रत, मंगला गौरी व्रत
बुधवार	23 जुलाई को	शिव चतुर्दशी व्रत
गुरूवार	24 जुलाई को	हरियाली अमावस्या
शनिवार	26 जुलाई को	सिंघारा दोज

मेष

इस सप्ताह सभी लोग आपसे प्रसन्न रहेंगे, अपने घर में आप निर्माण संबंधी कोई सुधार कर सकते हैं, पुराना घर बेचकर नया घर खरीदने पर विचार होगा. अविवाहितों को मनचाहा जीवनसाथी मिल सकता है, धार्मिक यात्रा होगी, छात्रों को कई मुश्किलों का सामना हो सकता है, व्यवसायिक वर्ग को नये अनुबंधों में शामिल होने के पहले गंभीरता से विचार करना चाहिये.

वृषभ

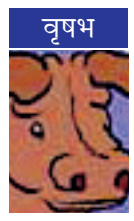

इच्छित सफलता के लिये कार्य योजना में बदलाव संभव है, प्रापर्टी के कारोबार में अच्छा लाभ मिलेगा, व्यापारी आयात निर्यात के बारोबार की शुरूआत कर सकते हैं, आप अतिरिक्त जिम्मेदारी को आसानी से निभा लेंगे, सप्ताह के शुरूआत में आप भ्रमण की स्थिति में रहेंगे, परन्तु धीरे धीरे आप नये आयामों की ओर बढ़ेंगे. वित्तीय स्थिति से संतुष्ट रहेंगे.

मिथुन

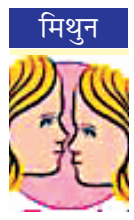

अपने आसपास का माहौल खुशनुमा पायेंगे, मेहमानबाजी में आनन्द महसूस करेंगे, आफिस में आपके खुले विचारों को कोई पसंद नहीं करेगा, अतीत से वर्तमान के साथ सामंजस्य बैठाने की कोशिश करेंगे, शेयर में धन निवेश से परहेज करें, व्यवसाय में सावधानी बरतें, आपसी संबंधों में अनदेखी न करें, संतान की उन्नति होगी, गुमी वस्तु मिलने का योग है.

कर्क

आप अपने लक्ष्य को हासिल करने में सफल रहेंगे, घर के सदस्यों के स्वास्थ्य को लेकर थोड़ी परेशानी का सामना करना पड़ेगा. आस पड़ौस या रिश्तेदारों के साथ संबंध सुधरेंगे, सप्ताह में व्यवसाय व्यापार के विस्तार की संभावना बनती है, आप सही और गलत के बीच उलझ सकते हैं, मेल मुलाकात उपयोगी रहेगी, अधिनस्थ आपका सहयोग करेंगे.

सिंह

कार्य क्षेत्र में आपको प्रतिभा दिखाने का बेहतर अवसर मिलेगा. आपको उत्तराधिकार का अवसर मिल सकता है, उदारता पर अंकुश रखे तो राहत मिलेगी. छात्रों को प्रतियोगी परीक्षा में सफलता मिलेगी, सप्ताह में किसी रिश्तेदार से सुखद समाचार मिलेगा कामकाजी महिलाओं को परेशानी होगी, जीवनसाथी के स्वास्थ्य की चिन्ता रहेगी.

कन्या

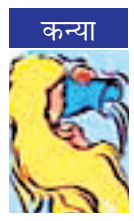

परिस्थिति के अनुकूल विनम्रता अच्छी सफलता दिला सकती है, बहसबाजी और मुंह पर बोलने की आदत पर रोक लगायें, कार्य और व्यापार को सिर्फधन कमाने का साधन ही नहीं समझें, बल्कि प्रतिष्ठा का आधार भी मानें, सामाजिक जिम्मेदारी अच्छे से निभायेंगे,परिश्रम अधिक करना पड़ेगा, कार्यक्षेत्र में प्रभावशाली सिद्ध होंगे.

तुला

आपको कठिन प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ेगा, निर्धारित लक्ष्यों को पूरा करने के लिये अधिकारी दबाव बना सकते हैं, पद प्रतिष्ठा प्राप्ति का योग है, पारिवारिक जीवन में प्रेम आनन्द की अनुभूति मिलेगी, सप्ताह के मध्य विपरीत परिस्थिति से डटकर मुकाबला करना पड़ेगा, जीवनसाथी के स्वास्थ्य का ध्यान रखें.

वृश्चिक

पहिले से चले आ रहे कार्य जारी रहेंगे, नये कार्यों में हाथ न डालें, लंबे समय से जिस सफलता की उम्मीद कर रहे हैं, वह मिलेगी, कार्यक्षेत्र में आपको विरोधियों का सामना करना पड़ेगा. जोड़ों का दर्द, बुखार आदि से परेशानी हो सकती है, पारिवारिक कार्यों में सफलता मिलेगी. भावनात्मक संबंधों में निकटता आयेगी, प्रापर्टी से अच्छा लाभ मिलेगा.

धनु

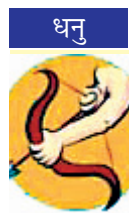

कुछ अच्छे दोस्त बन सकते हैं, जो आगे आपकी मदद कर सकते हैं, घरेलू कार्यो को जिम्मेदारी से करें, टालमटोल की प्रवृत्ति का परिणाम हानिप्रद हो सकता है, घरेलू माहौल खुशनुमा रहेगा, सप्ताह के मध्य बढ़ते हुये खर्च सामने आयेंगे, व्यापार की कार्य योजना का विस्तार होगा, अधिक जल्दबाजी से निर्णय न करना हितकर रहेगा, सत्संग में रूचि बढ़ेगी.

मकर

यदि आप अस्वस्थ्य और कमजोर हैं, तो स्वास्थ्य में सुधार होगा, नये पार्टनरशिप के साथ कार्य के लिये समय अनुकूल है, अपने कार्य की क्षमता को पहचानकर कार्य करें, घरेलू मामलों के लिये सप्ताह अच्छा है, सप्ताह के उत्तरार्ध में भाग्य साथ देगा, लक्ष्य की प्राप्ति के लिये आपको अत्याधिक खर्च और परिश्रम करना पड़ेगा.

कुम्भ

आपके अधिकारी व शुभचिन्तक धन कमाने में आपकी सहायता करेंगे, व्यापार से जुड़े लोग बेहतर प्रदर्शन कर सकते हैं, घरेलू आयोजन आनन्ददायक रहेगा, आप अपने से जुड़े लोगों के साथ संवाद बनाये रखें, सकारात्मक दृष्टिकोण आपको सफलता दिलायेगा, कार्यक्षेत्र में उन्नति होगी, आमदानी में वृद्धि होगी, जीवनसाथी की अपेक्षायें बढ़ेंगी.

मीन

अकेले काम का बोझ उठा लेने से आपको नुकसान हो सकता है, अपने सहकर्मियों या अधिनस्थों के कारण कुछ परेशानी हो सकती है, नये कारोबार की शुरूआत ठीक रहेगी, पुवृश्चिक गलती को सुधारकर आगे बढ़ें, जीवन आसान हो जायेगा, कार्यक्षेत्र में आप मुश्किलों का डटकर सामना करेंगे, सप्ताह में आपको अपने प्रयासों में अच्छी सफलता मिलेगी.

सुख-समृद्धि के लिए देवताओं की तस्वीर लगाने के नियम

भारतीय संस्कृति में घर में वास्तु नियमों का पालन करने से सुख-समृद्धि बनी रहती है. इसी कड़ी में घरों में देवी-देवताओं की तस्वीरें लगाना भी शुभ माना जाता है.

हनुमान जी की तस्वीर लगाने का सही स्थान- वास्तु शास्त्र के अनुसार, हनुमान जी की पंचमुखी तस्वीर लगाने के लिए घर का दक्षिण-पश्चिम कोना सबसे उत्तम माना गया है. यह कोना समृद्धि और स्थिरता का प्रतीक है. इस दिशा में पंचमुखी हनुमान जी की तस्वीर लगाने से वास्तु दोष से राहत मिलती है और घर में सकारात्मक ऊर्जा का प्रवाह बढ़ता है. हनुमान जी की तस्वीर लगाने से पहले उस स्थान को अच्छी तरह साफ कर गंगाजल का छिड़काव करना चाहिए. इसके बाद हं हनुमते नमः मंत्र का जप करते हुए तस्वीर स्थापित करें. मंगलवार और शनिवार को, इस तस्वीर के सामने चमेली के तेल का दीपक जलाना शुभ माना जाता है.

अन्य देवी-देवताओं की शुभ तस्वीरें- वास्तु शास्त्र में भगवान गणेश, लक्ष्मी, सरस्वती और अन्य देवी-देवताओं की तस्वीरें घर में लगाने से भी सुख-समृद्धि बढ़ने की मान्यता है. इन तस्वीरों को पूर्व या उत्तर दिशा की ओर मुख करके लगाना शुभ माना जाता है. पूजा स्थल पर देवी-देवताओं की फोटो को हमेशा ईशान कोण में रखना चाहिए.

इन गलतियों से बचें- घर में कभी भी टूटी हुई या खंडित तस्वीरें नहीं रखनी चाहिए, क्योंकि इससे वास्तु दोष का खतरा बढ़ सकता है. ऐसी तस्वीरों को सम्मानपूर्वक विसर्जित कर क्षमा याचना करनी चाहिए. वास्तु के अनुसार, देवी-देवताओं की तस्वीरों को बेडरूम या बाथरूम के पास नहीं लगाना चाहिए, अन्यथा इसके नकारात्मक परिणाम हो सकते हैं.

शिवरात्रि पर 24 साल बाद बन रहा दुर्लभ संयोग

5 राशियों पर पड़ेगा गहरा असर

इस वर्ष की सावन शिवरात्रि ज्योतिषीय दृष्टि से एक अद्वितीय संयोग लेकर आई है. 23 जुलाई, दिन बुधवार को मनाई जाने वाली शिवरात्रि पर 24 वर्षों के लंबे अंतराल के बाद एक बार फिर चंद्रमा, गुरु, शुक्र, सूर्य और बुध ऐसे योग बना रहे हैं, जो शिव भक्ति के साथ-साथ राशियों पर गहरा असर डालने वाले हैं. पिछली बार यह संयोग 2001 में बना था, और तब भी शिवरात्रि बुधवार को ही थी. इस वर्ष शुक्र वृषभ में, चंद्रमा और गुरु मिथुन में, और सूर्य-बुध एक साथ होने के कारण मालव्य, गजकेसरी और बुधादित्य जैसे शुभ योग बन रहे हैं.

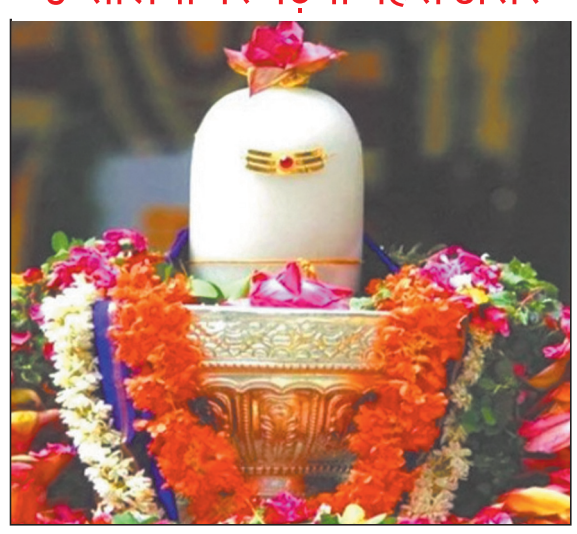

राशियों पर पड़ेगा गहरा प्रभाव

इन ग्रह स्थितियों का सर्वाधिक शुभ असर वृषभ, मिथुन, कर्क, वृश्चिक और धनु राशियों पर देखा जाएगा.

वृषभ राशि- शुक्र के कारण मालव्य राजयोग का लाभ मिलेगा. यह योग धन, संपत्ति, सुंदरता और ऐश्वर्य से जुड़ा है. इस दौरान आर्थिक उन्नति, अचल संपत्ति में निवेश और पारिवारिक सुख-संतुलन मिलेगा.

मिथुन राशि- चंद्रमा और गुरु का संगम गजकेसरी योग बनाएगा. इससे करियर में उन्नति, नौकरी में प्रमोशन और समाज में मान-सम्मान मिलेगा. कार्यक्षेत्र में प्रभाव बढ़ेगा और नेतृत्व की सराहना होगी.

कर्क राशि- बुधादित्य योग का जबरदस्त लाभ मिलेगा. बुध और सूर्य के एक साथ होने से बुद्धिमत्ता, प्रशासनिक क्षमता और निर्णय लेने की शक्ति बढ़ती है. सरकारी नौकरी में नए अवसर और परिवार के सहयोग से नया व्यवसाय सफल हो सकता है.

वृश्चिक राशि- यह शिवरात्रि विशेष फलदायी साबित हो सकती है. मालव्य योग के कारण वाहन सुख, भौतिक समृद्धि और दाम्पत्य जीवन में प्रेम मिलेगा. अविवाहितों के लिए अच्छे रिश्ते आ सकते हैं और विवाहितों के रिश्ते मजबूत बनेंगे. कला, संगीत और साहित्य से जुड़े लोगों को सम्मान और प्रसिद्धि मिल सकती है.

धनु राशि- गुरु और चंद्रमा की सप्तम दृष्टि से गजकेसरी योग का विशेष असर देखने को मिलेगा. इससे आर्थिक लाभ, उच्च पद और समाज में प्रतिष्ठा में वृद्धि संभव है. साथ ही विदेश यात्रा के योग भी बन सकते हैं. संतान की कामना कर रहे दंपत्तियों के लिए यह शिवरात्रि आशाजनक समाचार ला सकती है.

शिव भक्ति से मिलेगा दुगना फल

इन शुभ ग्रह योगों का लाभ उठाने के लिए सावन शिवरात्रि के दिन श्रद्धा, संयम और नियमपूर्वक भगवान शिव की आराधना करें. शिवलिंग पर गंगाजल, दूध, शहद, धतूरा और बेलपत्र अर्पित करें. महामृत्युंजय मंत्र या ॐ नमः शिवायॐ का जप करें. संभव हो तो उपवास रखें और जरूरतमंदों की मदद करें. यह 24 वर्षों में एक बार आने वाला शुभ संयोग न केवल धार्मिक, बल्कि ज्योतिषीय दृष्टि से भी जीवन बदलने वाला साबित हो सकता है. इस बार के योगों से ग्रह दोषों की शांति होगी और सकारात्मक ऊर्जा का प्रवाह होगा, जो जीवन के कई क्षेत्रों में नई गति भर सकता है.

भोजन की दिशा का महत्व : क्या दक्षिण दिशा में मुंह करके खाना अशुभ है?

भोजन करते समय खानपान की शुद्धता के साथ-साथ आसन, समय और दिशा का भी विशेष महत्व होता है. इन्हीं मान्यताओं में से एक प्रमुख चर्चा का विषय है - क्या दक्षिण दिशा में मुंह करके भोजन करना अशुभ होता है?

भारतीय संस्कृति में भोजन को केवल शारीरिक आवश्यकता नहीं, बल्कि एक पवित्र अनुष्ठान माना जाता है. भोजन करते समय खानपान की शुद्धता के साथ-साथ आसन, समय और दिशा का भी विशेष महत्व होता है. इन्हीं मान्यताओं में से एक प्रमुख चर्चा का विषय है - क्या दक्षिण दिशा में मुंह करके भोजन करना अशुभ होता है?

दक्षिण दिशा-यम की दिशा, सामान्यतः अशुभ- वास्तुशास्त्र के विशेषज्ञों के अनुसार, दक्षिण दिशा को हिन्दू धर्म में यम दिशा माना गया है. यमराज मृत्यु के देवता हैं, और उनकी दिशा को मृत्यु, नकारात्मक ऊर्जा और पितृलोक से जोड़ा जाता है. इसलिए सामान्य परिस्थितियों में इस दिशा में मुंह करके भोजन करना अशुभ माना जाता है. वास्तु विशेषज्ञ आदित्य झा बताते हैं, दक्षिण दिशा की ओर मुंह करके भोजन करने से शरीर और मन पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है. यह ऊर्जा संतुलन को बिगाड़ सकता है और दीर्घकालिक रूप से मानसिक अस्थिरता ला सकता है.

कब दक्षिण दिशा शुभ मानी जाती है?- हालांकि दक्षिण दिशा को आमतौर पर अशुभ माना जाता है, लेकिन कुछ धार्मिक और पितृकर्म के अवसरों पर यह अत्यंत शुभ होती है. विशेष रूप से पितृ पक्ष में जब पूर्वजों को तर्पण या भोजन समर्पित किया जाता है, श्राद्ध कर्म के समय, या ब्राह्मण भोज कराते समय यदि उसे पितृ तुल्य माना जा रहा हो, तो दक्षिण दिशा की ओर मुंह करके भोजन कराना पितृदोष निवारण और पूर्वजों की आत्मा की शांति के लिए लाभकारी माना गया है.

अन्य दिशाओं का महत्व- वास्तुशास्त्र में अन्य दिशाओं की ओर मुंह करके भोजन करने के भी विशेष प्रभाव बताए गए हैं-

पूर्व दिशा- स्वास्थ्य, मानसिक स्पष्टता और रोग-प्रतिरोधक क्षमता में वृद्धि.

उत्तर दिशा- आर्थिक उन्नति, करियर ग्रोथ और धन लाभ.

पश्चिम दिशा- यश, समाज में प्रतिष्ठा और व्यापारिक लाभ.

दक्षिण दिशा- केवल विशेष धार्मिक कार्यों में शुभ.

वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भोजन की दिशा का सीधा कोई संबंध नहीं माना गया है. वैज्ञानिकों का मानना है कि भोजन करते समय दिशा से अधिक महत्वपूर्ण साफ़-सुथरा और शांत वातावरण, भरपूर प्राकृतिक प्रकाश, ताजगी और सकारात्मक मानसिक अवस्था है. यह भी सच है कि पूर्व और उत्तर दिशा में सुबह के समय सूर्य की रोशनी अधिक आने से मानसिक ताजगी मिलती है, जो पाचन को भी बेहतर बनाती है.

निष्कर्षतः, दक्षिण दिशा की ओर मुंह करके भोजन करना वास्तुशास्त्र और परंपरा के अनुसार सामान्य परिस्थितियों में टालने योग्य है. परन्तु विशेष धार्मिक कार्यों, विशेषकर पितरों को अर्पित भोज में यह दिशा अत्यंत पुण्यकारी मानी जाती है. संस्कृति और विज्ञान दोनों का समन्वय ही हमें संतुलित जीवन की ओर ले जाता है. इसलिए दिशा का ध्यान रखें, लेकिन साथ ही शुद्धता, संतुलन और मानसिक स्थिरता को भी प्राथमिकता दें.